2023

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन शृङ्ग

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

Peer Reviewed Journal

जनवरी–मार्च २०२३

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय साहित्य का अवदान

विशेषांक

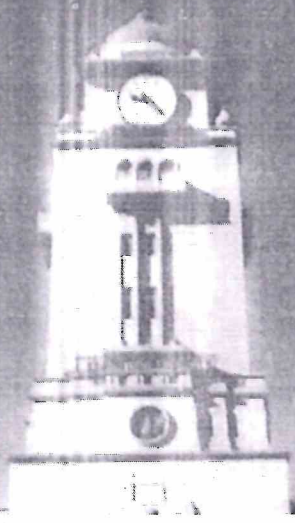

J.P. COLLEGE OF EDUCATION GADAG 582101

PRINCIPAL
J.P. College of Education
GADAG-582101

Swathantratha Sangram me Bharathiya Kaviyon ka yogadhana.

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय कवियों का योगदान

• डा.शिल्पा.एल.हिरेकेरुर

भरत साहित्यकारों से भरा हुआ एक महान देश है। जब भारत पर अंग्रेजों का हुकूमत चल रही थी तब भारत वासियोंका हालात बिगड रहीति भारतीय संस्कृति,परंपरा अपनी अस्तित्व खोने लगी थी , सदियों पुरानी अपनी परंपराओं को बचाना और भारत माता को उन अंग्रेजों से मुक्त करना जरूरी था। उस समय अनेक आंदोलनकारों ने भारत को आजादी दिलाने केलिए स्वतंत्र संग्राम में भाग लिए। और आजादी की लड़ाई में तत्कालीन राजनेताओं का ही नहीं, बल्कि साहित्यकारों, कवियों, वकीलों और छात्रों का भी अहम योगदान था। भारत के महान साहित्यकारों ने आजादी की लड़ाई में अहम योगदान दिया था। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से युवकों में आजादी के लिए लड़ने का जज्बा पैदा किया था। साहित्यकारों ने न केवल आजादी की लड़ाई में नई जान फूंकी बल्कि भारतीय भाषाओं के साहित्य को मजबूती देते हुए नए आयाम प्रदान किए। उपन्यास और कहानी के अलावा कवियों ने अपनी कविता से लोगों में देशप्रेम की ऐसी अलख जगाई कि लोग घरों से बाहर निकल आए और क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया है। भारत में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि हमारी परतंत्रता का इतिहास। यह देश हजारों वर्ष से भी अधिक समय तक गुलाम रहा, परंतु इसका सांस्कृतिक स्वरूप अक्षुण्ण बना रहा। भारत की राष्ट्रीयता का आधार राजनीतिक एकता न होकर सांस्कृतिक एकता रही है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जिस आधुनिक युग का प्रारंभ किया, उसकी जड़ें स्वतंत्रता आंदोलन में ही थीं। भारतेंदु और भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने युग चेतना को पद्य और गद्य दोनों में अभिव्यक्ति दी। इसके साथ ही इन साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम और सेनानियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोगों की आस्था जगाने का प्रयास किया। वहीं दूसरी ओर उन्होंने अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। द्विवेदीयुगीन काल शुद्ध राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना से अनुप्राणित है। द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने भी स्वतंत्रता संग्राम में अपनी लेखनी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने भारतीय स्वाधीनता हेतु अपनी तलवाररूपी कलम को पैना किया। इन कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतु प्रेरित किया। यह हम द्विवेदी जी की कविता याद कर सकते है।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने अपनी रचनाओं के जरिए आजादी के मतवालों में जोश भरने का काम किया था। उन्होंने राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार कर भारत के रणबांकुरों को स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बहुत सरल शब्दों में देश के लोगों की चेतना को झकझोर कर रख दिया था। उनकी देश भक्ति की कविताओं को लोग आज भी पढ़कर रोमांचित हो उठते हैं।'भारत-भारती' के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त 'राष्ट्रकवि' कहलाए, तो वहीं माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' लिखकर जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान के भाव जागृत किए। सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झांसी की रानी' आदि कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को तेज करने में अद्वितीय भूमिका अदा की। मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवासियों को स्वर्णिम अतीत की याद दिलाते हुए वर्तमान और भविष्य को सुधारने की बात की:-

'हम क्या थे, क्या हैं, और क्या होंगे अभी
आओ विचारे मिलकर ये समस्याएं सभी।'

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आह्वान किया :

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।

काकोरी कांड के नायक राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी कृतियों के जरिए युवाओं के अंदर देश प्रेम की भावना जागने का प्रयास किया था। आजादी की लड़ाई के दौरान इनका लिखा प्रसिद्ध गीत सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है, जोर कितना बाजुए कातिल में है, युवाओं की जुबान पर था। उन्होंने अपने गीत के जरिए अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ने का आह्वान किया था।भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक सेनानी, पत्रकार और समाजसेवी श्यामलाल गुप्त पार्षद ने अपनी लेखनी के जरिए आजादी की लड़ाई में अहम भूमिका निभाई थी। उनके द्वारा लिखा गया गीत विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ने आजादी के मतवालों में जोश भरने का काम किया था।मोहम्मद इकबाल ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ मुस्लिम समाज को जगाया और क्रांति के लिए प्रेरणा दी। इनके द्वारा रचित 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तां हमारा' ने आजादी की लड़ाई लड़ रहे युवाओं में जोश भर दिया था। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने भी अपनी रचनाओं के जरिए अंग्रेजी हुकूमत की चुलें हिलाकर रख दी थी। इन्हें आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप जाना जाता है। दिनकर ने अपनी रचनाओं के जरिए अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनता पर किए जा जुल्म का जमकर विरोध किया था। इन्हें विद्रोही कवि के रूप में भी जाना जाता था।

इन कवियों ने यह वीर रस वाली कविताएं सृजित कर रणबांकुरों में नई चेतना का संचार किया। इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर', राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों गीत आजादी के परवानों को प्रेरित करता है। 'वहीं हमारे राष्ट्रगान 'जन गण मन अधिनायक' के रचयिता रवींद्र नाथ ठाकुर का योगदान अद्वितीय व अविस्मरणीय है।

'पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं' का मर्म स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहे वीर सैनिक ही नहीं वफादार प्राणी भी जान गए, तभी तो पं. श्याम नारायण पांडेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए 'हल्दी घाटी' में लिखा :

रणबीच चौकड़ी भर-भरकर,
चेतक बन गया निराला था,
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था,
गिरता न कभी चेतक तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था,
वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर,
या आसमान पर घोड़ा था।

देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा', सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश', निराला ने भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे', कामता प्रसाद गुप्त ने 'प्राण क्या हैं देश के लिए, देश खोकर जो जिए तो क्या जिए', तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' में कहा :

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाए
नाश ! नाश! हां महानाश! ! ! की
प्रलयंकारी आंख खुल जाए।
जिस देश में गंगा बहती है : शैलेंद्र
होठों पे सच्चाई रहती है, जहां दिल में सफ़ाई रहती है
हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं
जिस देश में गंगा बहती है
मेहमां जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है
ज़्यादा की नहीं लालच हमको, थोड़े में गुज़ारा होता है
बच्चों के लिए जो धरती मां, सदियों से सभी कुछ सहती है
हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं
जिस देश में गंगा बहती है

इन सभी कविताओं से आती है वतन की खुशबू ।आज के हमारे कवियों और साहित्यकारों का यह महती दायित्व बनता है कि वे इस देश के बारे में सोचें और उसी परंपरा को जीवित रखें, जो मैथिलीशरण गुप्त की परंपरा है, प्रेमचंद की परंपरा है, नीरज की परंपरा है। प्रस्तुत समाज में हम को बहुत ही इन सभी कव्योंसे प्रेरणा मिलती है।और उन दिनों में देश भक्ति को लेकर किस तरा की आंदोलन भावना लोगोंके मन में थी और जन मानस में राष्ट्रीयता भरने केलिए साहित्य का भूमिका का महत्व ये भी पता चलता है।हिन्दी के अलावा बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तमिल व अन्य भाषाओं में भी माइकेल मधुसूदन, नर्मद, चिपलुन ठाकर, भारती आदि कवियों व साहित्यकारों ने राष्ट्रप्रेम की भावनाएं जागृत कीं और जनमानस को आंदोलित किया।

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय कवियों का योगदान

• डा.शिल्पा.एल.हिरेकेरुर

भरत साहित्यकारों से भरा हुआ एक महान देश है। जब भारत पर अंग्रेजों का हुकूमत चल रही थी तब भारत वासियोंका हालात बिगड़ रहीति भारतीय संस्कृति,परंपरा अपनी अस्तित्व खोने लगी थी , सदियों पुरानी अपनी परंपराओं को बचाना और भरत माता को उन अंग्रेजों से मुक्त करना जरूरी था। …ष समय अनेक आंदोलनकारों ने भारत को आजादी दिलाने केलिए स्वतंत्र संग्राम में भाग लिए। और आजादी की लड़ाई में तत्कालीन राजनेताओं का ही नहीं, बल्कि साहित्यकारों, कवियों, वकीलों और छात्रों का भी अहम योगदान था। भारत के महान साहित्यकारों ने आजादी की लड़ाई में अहम योगदान दिया था। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से युवकों में आजादी के लिए लड़ने का जज्बा पैदा किया था। साहित्यकारों ने न केवल आजादी की लड़ाई में नई जान फूंकी बल्कि भारतीय भाषाओं के साहित्य को मजबूती देते हुए नए आयाम प्रदान किए। उपन्यास और कहानी के अलावा कवियों ने अपनी कविता से लोगों में देशप्रेम की ऐसी अलख जगाई कि लोग घरों से बाहर निकल आए और क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया है। भारत में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि हमारी परतंत्रता का इतिहास। …ह देश हजारों वर्ष से भी अधिक समय तक गुलाम रहा, परंतु इसका सांस्कृतिक स्वरूप अक्षुण्ण बना रहा। भारत की राष्ट्रीयता का आधार राजनीतिक एकता न होकर सांस्कृतिक एकता रही है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जिस आधुनिक युग का प्रारंभ किया, उसकी जड़ें स्वतंत्रता आंदोलन में ही थीं। भारतेंदु और भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने युग चेतना को पद्य और गद्य दोनों में अभिव्यक्ति दी। इसके साथ ही इन साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम और सेनानियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोगों की आस्था जमाने का प्रयास किया। वहीं दूसरी ओर उन्होंने अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। द्विवेदीयुगीन काल शुद्ध राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना से अनुप्राणित है। द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने भी स्वतंत्रता संग्राम में अपनी लेखनी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने भारतीय स्वाधीनता हेतु अपनी तलवाररूपी कलम को पैना किया। इन कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतु प्रेरित किया। यह हम द्विवेदी जी की कविता याद कर सकते है।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने अपनी रचनाओं के जरिए आजादी के मतवालों में जोश भरने का काम किया था। उन्होंने राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार कर भारत के रणबांकुरों को स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बहुत सरल शब्दों में देश के लोगों की चेतना को झकझोर कर रख दिया था। उनकी देश भक्ति की कविताओं को लोग आज भी पढ़कर रोमांचित हो उठते हैं।'भारत-भारती' के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त 'राष्ट्रकवि' कहलाए, तो वहीं माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' लिखकर जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान के भाव जागृत किए। सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झांसी की रानी' आदि कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को तेज करने में अद्वितीय भूमिका अदा की। मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवासियों को स्वर्णिम अतीत की याद दिलाते हुए वर्तमान और भविष्य को सुधारने की बात की:-

'हम क्या थे, क्या हैं, और क्या होंगे अभी
आओ विचारे मिलकर ये समस्याएं सभी।'

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आह्वान किया :

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।

J.P. COLLEGE OF EDUCATION GADAG 582101
PRINCIPAL
J.P. College of Education
GADAG-582101